International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 1; Issue 6; August 2016; Page No. 35-39

आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान में बाबा साहेब डॉ0 बी0 आर0 आंबेडकर का योगदान

Shyam Vir

Department of Buddhist Studies, University of Delhi, New Delhi, India

प्रस्तावना

"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुकम्पाय" तथा "अपासिनवेबहुकयानेदयादाने सचेसोचयेमाददेसाधवे च" जैसी उक्तियों को सच्चे अर्थों में चरितार्थ करने वाले बौद्ध धर्म का लगभग छः, सात शताब्दियों के अवरोध के बाद आज एशिया के अनेक देशों में पुनरूत्थान हो रहा है। जापान में यह पुनरूत्थान सन् 1968 ई. में प्रारम्भ हुआ। इसके कुछ वर्ष बाद सिंहल (श्रीलंका) में बौद्ध धर्म ने अपना सिर उठाया और मेग्गेतुंवत्ते गुणनंद एच सुमंगल और कर्नल एच. एस. आल्कोट के कार्यों ने राष्ट्रीय धर्म को आगे बढ़ाया। चीन में बौद्ध धर्म का जागरण चीनी भिक्षु ताई–शू के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप हुआ। बर्मा में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान का कार्य महान विद्वान और संत लेदि समदाव ने आरम्भ किया। इसी प्रकार भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान एक व्यवस्थित आन्दोलन के रूप में सन् 1891 में शुरू हुआ जब अनागारिक धर्मपाल ने "महोबोधि सभा" की स्थापना की। बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान भारत में सामान्यतः 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से शुरू हुआ है, जिसे धर्मों के इतिहास में एक विशेष–महत्वपूर्ण और विस्मयकारी घटना माना जा सकता है। एक धर्म जो शताब्दियों से लुप्त हो गया हो तत्पश्चात् फिर जनता की इच्छा से इस प्रकार पुनर्जीवित हो इसकी मिशाल विश्व के इतिहास में मिलनी मुस्किल है। आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म की इस जन्मभूमि में बौद्ध धर्म का नाम लगभग विस्मृत सा हो चुका था परन्तु आज यह घर–घर का शब्द बन गया है। भारत के राष्ट्रपति की कुर्सी के ऊपर लोकसभा में 'धर्मचक्रप्रवर्तनाय' लिखा हुआ है जो हमें भगवान बुद्ध के साथ–साथ अशोक की धर्मविजय की भी याद दिलाता है। इसी प्रकार अशोक स्तम्भ के शीर्ष पर अंकित सिंह जो विश्व की चारो दिशाओं में निर्भयतापूर्वक धर्म की घोषणा करतें हैं, भारतीय गणराज्य की मुद्रा के प्रतीक के रूप में स्वीकार किए गए हैं। भारतीय राष्ट्रपताका पर धर्मचक्र का चिन्ह अंकित है। उपर्युक्त सभी तथ्य बौद्ध धर्म के मूल तत्वों और विचारधारा को स्पष्ट करते हैं, ये सभी स्वतंत्र भारत के भारतीय संविधान में विधिसम्मत हैं।

आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान में कई आधुनिक महान विभूतियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार, संवृद्धि और विकास हेतु इन आधुनिक महान विभूतियों नें अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान हेतु एक मजबूत आधार तैयार कर दिया जिससे भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान संभव हो सका। इन महान विभूतियों ने आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान की नींव रखी और उसी नींव पर आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार, अभिवृद्धि और विकास निरन्तर जारी है। जिनके अथक प्रयत्न और महानतम योगदान से आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान संभव हो सका इन महानतम बौद्ध मनीषियों में अनागारिक धर्मपाल, कृपाशरण महास्थाविर, चन्द्रमणि महास्थविर, बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर, राहुल सांकृत्यायन, भदंत आनंद कौशल्यायन, भिक्षु जगदीश काश्यप इत्यादि का नाम बड़े ही आदर सम्मान से लिया जाता है। उपर्युक्त महानतम बौद्ध मनीषियों में बाबा साहेब डॉ.बी.आर. आंबेडकर द्वारा आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान से सम्बन्धित कार्य को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है।

भारत रत्न बाबा साहेब डॉ0 भीमराव राम जी आंबेडकर

बौद्धों की पवित्र पुस्तक ''धम्मपद'' की गाथा 58–59 में कहा गया है कि'

यथा संकारधानस्मि उज्झितस्मि महापथे।
पदुमं तत्थ जायेथ सुचिगन्धं मनोरमं।।

अर्थ – जैसे किसी बड़े महापथ (सड़क) के किनारे फेंके हुए कूड़े के ढ़ेर में कोई सुगंधित सुन्दर पद्म (फूल) उत्पन्न हो जाए।

एवं संकार भूतेसु अन्धभूते पुथुज्जने।
अतिरोचति पञ्ञाय सम्मासम्बुद्ध सावको।।[1]

अर्थ – ठीक वैसे ही कूड़े–कचरे के समान जनों में सम्यक सम्बुद्ध का श्रावक अपनी प्रज्ञा से अधिक शोभित होता है।

ऐसे सड़े–गले कूड़े कचरे के समान अछूत समाज में महामानव बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. में महाराष्ट्र के महू छावनी में रामजी राव के यहां महार परिवार में हुआ था। इनका जन्म ऐसे समय में हुआ जबकि छुआछूत की कुप्रथा अपनी चरम सीमा को लांघ चुकी थी। उस समय सवर्ण लोग अछूतों की छाया से भी नफरत करते थे। ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था के प्रभाव से समाज में समानता और जातिप्रथा का सर्वत्र व्यापक बुरा प्रभाव था। डॉ. आंबेडकर नें हिन्दुओं के समस्त प्रतिबंधों को तोड़ते हुए शिक्षा के क्षेत्र में तीन महाद्वीपों एशिया, उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप से उच्चतम शिक्षा ग्रहण की।

डॉ. आंबेडकर जब विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त करके लौटे तो एक मामूली से चपरासी ने भी उनका अपमान किया। उन्हें घर से लेकर बाहर तक सभी जगह अपमानित होना पड़ा। इसका प्रमुख कारण ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था में अन्तर्निहित जातिप्रथा एवं अस्पृश्यता[2] थी। ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था में स्वीकृत जातिप्रथा एवं अश्प्रश्यता के कारण ही तथाकथित अछूतों को नारकीय जीवन जीना पड़ता था।

आधुनिक भारत में दलित जातीय सुधार आंदोलन

आधुनिक भारत में दलितजातीय सुधार आंदोलन के क्रम में जस्टिस पार्टी (रामास्वामी नायकर), द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके), श्री नारायण धर्म परिपालन योगम (श्री नारायण गुरू) तथा सत्यशोधक समाज (ज्योतिबा फुले)[3] के पश्चात् डॉ. बी. आर. आंबेडकर आते हैं। ''बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर ने दलित जातीय सुधार कार्यक्रमों के अंतर्गत कई संघों की स्थापना की। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त 1932 को ''साम्प्रदायिक निर्णय[4] की घोषणा की। साम्प्रदायिक निर्णय द्वारा, दलितों को सामान्य हिन्दुओं से पृथक कर एक अल्पसंख्यक वर्ग के रूप में मान्यता देने तथा पृथक प्रतिनिधित्व प्रदान करने का सभी राष्ट्रवादियों ने तीव्र विरोध किया। तदोपरान्त सितम्बर 1932 में महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर.

आंबेडकर के बीच हुए 'पूना पैक्ट'[5] में दलित वर्गों के लिए साधारण वर्ग में ही सीटों के आरक्षण का प्रावधान किया गया।

बाबा साहेब डॉ0 आंबेडकर द्वारा ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था की कटु आलोचना

अस्पृश्यता की समाप्ति एवं दलितों को सामाजिक न्याय दिलाने के क्रम में बाबा साहेब डॉ. बी.आर.आंबेडकर द्वारा हिन्दू धर्म में व्याप्त वर्णव्यवस्था की कटु आलोचना की गई क्योंकि उन्होंने हिन्दू धर्म की ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था का जब सम्यक् विश्लेषण किया तो पाया कि ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था दलितों के लिये पूर्ण रूपेण विनाशकारी है। हिन्दू धर्म की ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था को डॉ. आंबेडकर ने अव्यावहारिक, असामाजिक, अमानवीय, अनैतिक और अप्रासंगिक बताया। इस व्यवस्था में सवर्णों को सभी विशेषाधिकारों से युक्त तथा शूद्रों को अधिकारविहीन कर दिया गया है। ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था में शूद्रों की उन्नति के सारे रास्ते बन्द हैं और यह व्यवस्था शूद्रों के दमन पर आधारित है। शूद्रों द्वारा सर्वोच्च तीनों वर्णों की सेवा करना और उनका दमन सहन करना शूद्रों का परम धर्म बना दिया गया है।[6] ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था असमानता पर आधारित है।

उपर्युक्त विभिन्न कारणों से प्रभावित होकर बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर ने 1935 ई. में जात–पांत युक्त छुआ–छूतवादी हिन्दू धर्म को त्यागने की घोषणा येवला (नासिक)[7] में की थी। उसी समय से उन्होंने संसार के सभी प्रमुख धर्मों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया था। तत्पश्चात् उन्होंने यह पाया कि केवल बौद्ध धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो भारत में उत्पन्न धर्म है, और आज भी वह जीवन्त है तथा 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' हेतु सर्व प्रासंगिक है। इसलिए उसी समय (1935) से वे बौद्ध धर्म, दर्षन तथा संस्कृति आदि के मूल स्रोतों के अध्ययन में जुट गए थे।

ब्राह्मण धर्म और बौद्ध धर्म की तुलना

बाबा साहेब डॉ. बी. आर. आंबेडकर ने ब्राह्मण धर्म की बौद्ध धर्म से तुलना की इसके तहत उन्होंने दोनों धर्मों का तात्त्विक विश्लेषण और विवेचन किया तो उन्हें ज्ञात हुआ कि ब्राह्मण धर्म में शूद्रों के लिए सिवाए शूद्रों के विनाश के और कुछ भी नहीं है जबकि बौद्ध धर्म ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुकम्पाय'' की अवधारणा पर आधारित है। इसलिए बौद्ध धर्म ही तथाकथित समस्त शूद्रों हेतु कल्याणकारी हो सकता है।

समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की अवधारणा दलितों के लिए ब्राह्मण धर्म में नहीं है जबकि बौद्ध धर्म समानता,[8] स्वतंत्रता एवं बंधुत्व पर आधारित है।

मोक्ष की प्राप्ति दलित लोग, ब्राह्मण धर्म में रहकर नहीं कर सकते जबकि बौद्ध धर्म में निर्वाण की प्राप्ति सबके लिए संभव है।

शिक्षा प्राप्ति (उपनयन संस्कार),[9] शूद्र ब्राह्मण धर्म में रहकर नहीं कर सकते हैं जबकि बौद्ध धर्म अपनाकर शूद्र भी शिक्षा–दीक्षा ग्रहण कर सुसभ्य, सुशील एवं सुसंस्कृत बन सकते हैं एवं स्वाभिमान और सम्मानपूर्ण तरीके से जीवन निर्वाह कर सकते हैं।

छुआछूत की भावना, शूद्रों के प्रति हीन भावना ब्राह्मण धर्म में है जबकि बौद्ध धर्म में अस्पृश्यता नहीं है।[10] सभी वर्ण और जातियों के प्रति समानता का भाव बौद्ध धर्म की विशेषता है।

मंदिर प्रवेश (अपने इष्टदेव के दर्शन) ब्राह्मण धर्म में रहकर शूद्र नहीं कर सकते[11] जबकि बौद्ध धर्म में बौद्ध विहार, बौद्ध मंदिर इत्यादि सभी जातियों के लिए खुले रहते हैं।

ब्राह्मण धर्म में नारी शूद्रों के समकक्ष हीनतर स्थिति में रखी गई जबकि बौद्ध धर्म में स्त्री–पुरूष समानता पर बल दिया गया है।

बौद्ध धर्म की ओर झुकाव तथा बौद्ध धर्म का अधिग्रहण

उपर्युक्त तथ्यों पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि कुल मिलाकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इत्यादि किसी भी प्रकार के अधिकार शूद्रों के लिए ब्राह्मण धर्म में नहीं हैं, जबकि ये सभी अधिकार बौद्ध धर्म में शूद्रों को स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं। शूद्रों के प्रति ब्राह्मण धर्म की महानिकृष्टता, असामाजिकता, असमानता, अव्यावहारिकता, अनैतिकता और अमानवीयता की जगह बौद्ध धर्म का सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का व्यापक और विस्तृत दृष्टिकोण होने के कारण ही बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर ने बौद्ध धर्म को दलितोत्थान हेतु हितकारी, कल्याणकारी एवं प्रासंगिक माना[12] और वे बौद्ध धर्म के अधिग्रहण की तैयारी करने लगे। 14 अक्टूबर 1956 को बाबा साहेब ने नागपुर (महाराष्ट्र) में बौद्ध धर्म स्वीकार किया।

बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान

14 अक्टूबर 1956 से भारतीय दलितों के विमुक्ति आंदोलन[13] के इतिहास का स्वर्णिम युग आरम्भ होता है। इसी दिन दलितों के महानतम विमुक्तिदाता बोधिसत्व डॉ0 आंबेडकर ने नागपुर (महाराष्ट्र) की पवित्र दीक्षाभूमि में पांच लाख से अधिक दलितों को बौद्ध धर्म में दीक्षित करते हुए आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित किया।[14]

सामाजिक सांस्कृतिक क्रांति

बाबा साहेब द्वारा स्वयं बौद्ध धर्म में दीक्षित हो, लाखो दलितों को बौद्ध धर्म में धर्मांतरित कर बौद्ध आंदोलन के द्वारा एक ऐसी 'समग्र क्रांति' का सूत्रपात किया गया, जिसके द्वारा दलितों की विमुक्ति एवं सर्वांगिक विकास संभव है। धर्मपरिवर्तन पर आधारित इस सामाजिक सांस्कृतिक–क्रांति की सफलता के लिए 3 प्रकार के मूलभूत परिवर्तनों की आवश्यकता है।

1. 25 करोड़ से भी अधिक, देश के सभी भागों में विद्यमान सभी दलित जातियों में धम्म का तेजी से प्रचार–प्रसार कर उन्हें धम्म में दीक्षित कर धर्मांतरण को एक जन–आंदोलन बनाना।
2. वे लोग जो बौद्ध धर्म में दीक्षित हो चुके हैं, उनके संस्कारों में तेजी से परिवर्तन लाकर उन्हें धम्म के अनुरूप ढालना तथा उन्हें ईश्वर–आत्मा के जंजाल से निकालकर उनकी कुरीतियां दूर कर उन्हें सुसंस्कृत बनाना।
3. समाज में समानता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व की स्थापना के लिए सतत संघर्ष करना। इसके साथ साथ भारतीय दलितों के विमुक्ति आंदोलन की ठोस बुनियाद के लिये बाबा साहेब डॉ0 आंबेडकर ने दो महत्वपूर्ण कार्य किये:–
   i) इस आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने के लिये ''द बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया''[15] (भारतीय बौद्ध महासभा) नामक संस्था की स्थापना की।
   ii) इस आंदोलन को सही दिशा प्रदान करने के लिए एक क्रांतिकारी बौद्ध दर्शन के रूप में ''द बुद्धा एण्ड हिज धम्मा''[16] (भगवान बुद्ध और उनका धर्म) नामक महान बौद्ध ग्रन्थ की रचना की।

बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया के उद्धेष्य

बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया की स्थापना करते हुए बाबा साहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर ने सोसाइटी के निम्नलिखित उद्धेश्य[17] निर्धारित किये।

1. भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार को प्रोत्साहन देना।
2. बौद्ध धर्म के लिए बुद्ध विहारों की स्थापना करना।

3. धार्मिक तथा वैज्ञानिक विषयों के लिए विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना करना।
4. बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु कार्यकर्ता तैयार करने के लिये अध्ययन गोष्ठियाँ तैयार करना।
5. अनाथालय, चिकित्सालय तथा राहत केन्द्रों की स्थापना करना।
6. समस्त धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहन देना।
7. बौद्ध साहित्य के प्रकाशन की शुरूआत करना और जनसाधारण को बौद्ध धर्म की सच्ची जानकारी देने के लिये 'इस्तहार' तथा 'पुस्तिकाएं' प्रकाशित करना।
8. धर्मोपदेष्टाओं का नया संघ स्थापित करना।
9. प्रकाशन कार्य जारी रखने के उद्धेश्य से मुद्रणालय स्थापित करना।
10. सामूहिक कार्यवाही तथा मैत्री भाव की स्थापना के लिए सभा तथा सम्मेलनों का आयोजन करना।

"द बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया" उपरोक्त विषयों को दृष्टिगत रखते हुए बौद्ध पुनर्जागरण आंदोलन के संचालन में संघर्षरत है। उनके रास्ते में अनेक अवरोध हैं। उनकी विभिन्नताएं भी बेशुमार हैं, तथापि बौद्ध आंदोलन को आगे ले जाने में इस संस्था का योगदान ही सर्वाधिक है। आज सम्पूर्ण भारत में बौद्धों की सबसे बड़ी प्रतिनिधिक संस्था[18] "द बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया" ही है। धर्म प्रचार–प्रसार के कार्य को अधिक कुशलता के साथ करने के लिये, यदि आवश्यकता पड़ी तो, धर्मोपदेष्टाओं का नया संघ स्थापित करने का कार्य भी सोसाइटी अपने हाथ में लेगी।

धर्मोपदेष्टाओं के कर्त्तव्य

बौद्ध धर्म के विकास हेतु धर्मोपदेष्टाओं के विभिन्न कर्त्तव्य[19] निर्धारित किये गये हैं जैसे–

1. घूम–घूम कर धम्म प्रचार–प्रसार का कार्य करना।
2. धम्म दीक्षा का कार्य करना।
3. बौद्ध धार्मिक संस्कार करना।
4. समाज–सेवा से सम्बन्धित विभिन्न कार्य करना क्योंकि धर्म प्रचार–प्रसार हेतु समाज सेवा अनिवार्य है।

बाबा साहेब डॉ आंबेडकर बौद्ध भिक्षु को एक सच्चे समाज सेवक के रूप में देखना चाहते थे। उनके इस दृष्टिकोण को दृष्टिगत रखते हुए नए धर्मोपदेष्टाओं को समाज सेवा का कार्य भी बड़ी तन्मयता से करना चाहिए।

त्रिषरण एवं पंचषील

त्रिशरण[20] में बौद्धों द्वारा बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति सम्पूर्ण समर्पण और निष्ठा को अभिव्यक्त किया गया है। वहीं पंचशील[21] के द्वारा मन, वचन और कर्म से अकारण प्राणिहिंसा न करने (अहिंसा), सत्य, अस्तेय (बिना स्वीकृति कुछ न लेना) तथा ब्रह्मचर्य के पालन करने एवं मादक द्रव्यों के सेवन, प्रमाद के स्थान जुआ आदि से दूर रहने की प्रतिज्ञा की गई है।

बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म को ग्रहण करने के क्रम में त्रिशरण एंव पंचशील को ग्रहण करने की प्रक्रिया के साथ–साथ बौद्धों के लिए, क्रांतिकारी 22 प्रतिज्ञाओं को भी ग्रहण करना अनिवार्य बताया है। बौद्धों की ये 22 प्रतिज्ञाएं बौद्धों का बौद्ध धर्म के प्रति सम्पूर्ण समर्पण करने और बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार का महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।[22]

22 प्रतिज्ञाएं

1. मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश को कभी ईश्वर नहीं मानूंगा और न उनकी पूजा करूंगा।
2. मैं राम और कृष्ण को ईश्वर नहीं मानूंगा और न कभी उनकी पूजा करूंगा।
3. मैं गौरी, गणपति इत्यादि हिन्दू धर्म के किसी भी देवी देवता को नहीं मानूंगा और न उसकी पूजा करूंगा।
4. मैं इस पर विश्वास नहीं करूंगा कि ईश्वर ने कभी अवतार धारण किया है।
5. मैं इसे कभी नहीं मानूंगा कि तथागत बुद्ध विष्णु के अवतार हैं। मैं ऐसे प्रचार को मिथ्या और झूठा समझूंगा।
6. मैं श्राद्ध कभी नही करूंगा और न कभी पिण्डदान दूंगा।
7. मैं बौद्ध धम्म के विरूद्ध किसी की बात को नहीं मानूंगा।
8. मैं ब्राह्मणों के हाथों से कोई भी क्रिया–कर्म नहीं कराउंगा।
9. मैं इस सिद्धान्त को मानूंगा कि सभी मनुष्य एक हैं।
10. मैं समानता की स्थापना के लिए प्रयत्न करूंगा।
11. तथागत बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का पूर्ण पालन करूंगा।
12. मैं भगवान बुद्ध द्वारा बताई गई दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करूंगा।
13. मैं प्राणिमात्र पर दया भाव रखूंगा और उनका लालन–पालन करूंगा।
14. मैं चोरी नहीं करूंगा।
15. मैं झूठ नहीं बोलूंगा।
16. मैं व्याभिचार–अनाचार नही करूंगा।
17. मैं शराब आदि कोई नशा नही करूंगा।
18. मैं अपने जीवन को बुद्ध धर्म के तीन तत्वों–ज्ञान, शील व समता पर ढ़ालने का प्रयत्न करूंगा।
19. मैं मनुष्य मात्र के उत्कर्ष के लिये हानिकारक और मनुष्य मात्र को असमान और नीच समझने वाले अपने पुराने हिन्दू धर्म का पूरी तरह से त्याग करता हूँ और बुद्ध धम्म को स्वीकार करता हूँ।
20. मेरा विश्वास है कि बुद्ध धर्म सद्धम है।
21. मैं यह मानता हूँ कि मेरा पुनर्भव हो रहा है।
22. मैं यह पवित्र प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से मैं बुद्ध धम्म की शिक्षा के अनुसार आचरण करूंगा।

बाबा साहेब द्वारा प्रस्तुत की गईं उपर्युक्त 22 प्रतिज्ञाओं[23] में हिन्दू धर्म की मूल मान्यताओं, प्रथाओं, संस्थाओं, हिन्दू धर्म के देवी–देवताओं और ईश्वर के अस्तित्व को बिल्कुल ही नकार दिया गया है। भगवान बुद्ध को विष्णु का अवतार नहीं माना गया है तथा सभी मनुष्यों के बीच एकता और समानता पर बल दिया गया है तथा भगवान बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग एवं दस पारमिताओं के पूर्ण पालन की प्रतिज्ञा की गई हैं और प्राणिमात्र पर दयाभाव रखने, चोरी नही करने, झूठ नहीं बोलने एवं व्यभिचार नहीं करने, शराब नहीं पीने और बौद्ध धम्म की शिक्षा के अनुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा की गई है।

आमदनी का 20वां भाग बौद्ध धर्म की सम्वृद्धि हेतु

बौद्धों द्वारा उपार्जित अपनी आमदनी का कम से कम 20वां भाग[24] बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार, सम्वृद्धि और विकास हेतु दान देने का निर्णय लिया गया है।

बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु उपर्युक्त सभी प्रक्रियाएं अपनाने के पश्चात् बाबा साहेब डॉ0 आंबेडकर ने कहा कि भगवान बुद्ध ने परिस्थिति के अनुसार धर्म–प्रचार के ढंग को अपनाया अब हमें भी अपने समयानुसार इस धर्म के प्रचार का ढंग अपनाना होगा। इस देश में भिक्षु नहीं हैं। इसलिए आपमें से हर एक को इस धर्म की दीक्षा स्वयं लेनी चाहिए। इस बात की मैं पूर्व घोषणा करता हूँ कि बौद्ध धर्मानुयायी प्रत्येक व्यक्ति को, दूसरों को भी त्रिशरण, पंचशील एवं 22 प्रतिज्ञाओं सहित बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का पूर्ण अधिकार है।[25]

विष्व बौद्ध सम्मेलनों में भागीदारी

बाबा साहेब ने विश्व बौद्ध भ्रातत्व सम्मेलनों में भी भाग लिया और इस प्रकार इन सम्मेलनों के द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार और पुनरूत्थान सम्भव हुआ। श्रीलंका में द्वितीय विश्व बौद्ध भ्रातत्व सम्मेलन[26] 1950ई. में कोलम्बो में हुआ था। यहाँ पर बाबा साहेब ने 'बौद्ध धर्म का उदय और विकास' विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इसके पश्चात् तीसरा सम्मेलन 1954ई. में बर्मा[27] में हुआ था। इसमें बाबा साहेब ने 'भारत में बौद्ध धर्म का भविष्य' विषय पर अपना व्याख्यान केन्द्रित कर बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार की रूप–रेखा प्रस्तुत की थी। नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में विश्व बौद्ध भ्रातत्व का चौथा सम्मेलन[28] 1956 ई. में हुआ था। यहां बाबा साहेब द्वारा बौद्ध धर्म और मार्क्सवाद (बुद्धिज्म वर्सेज मार्कसिज्म)[29] विषय पर दिए गये एक लम्बे विश्लेषणात्मक व्याख्यान ने सभी बौद्ध मनीषियों को बहुत प्रभावित किया। बाबा साहेब ने इस व्याख्यान में कहा था कि मानव जीवन के सुख के लिए बुद्ध द्वारा जो मार्ग खोजा गया था मार्क्स ने उस मार्ग को शक्ति बल से प्राप्त करने का संदेश दिया। बुद्ध का मार्ग लम्बा अवश्य है लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित है, जबकि मार्क्स का मार्ग कम लम्बा है लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति अनिश्चित है।[30] इसे सुनकर राहुल सांकृत्यायन बहुत संतुष्ट हुए। बाबा साहेब द्वारा पांच लाख से अधिक लोगों को बौद्ध धर्म की दीक्षा देने पर अपने अध्यक्षीय भाषण में राहुल सांकृत्यायन ने काठमाण्डू में कहा था कि बाबा साहेब ने भारत में बौद्ध धर्म का एक ऐसा खम्बा स्थापित कर दिया है जिसे अब कोई हिला डुला नहीं सकता।[31]

उपसंहार

बाबा साहेब डॉ.बी.आर.आंबेडकर ने राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक जीवन की क्रान्ति पर जोर दिया, वे सामाजिक परिवर्तन चाहते थे। उनकी क्रान्ति का नारा था "शिक्षित बनों, संगठित रहो, संघर्ष करो।" उनके अनुसार व्यक्ति को विरोधी समाज के सामने झुकना नहीं चाहिये। हिन्दू धर्म की तकलीफों, विषमताओं, असमानताओं और अन्यायों को सहन करते हुये भी धर्म की उपयोगिता को उन्होंने जीवन की धुरी माना। यही कारण था कि दलित वर्ग के लिए महत्वपूर्ण भूमिका पर भी मार्क्सवादी उनको प्रभावित नहीं कर सके। डॉ. आंबेडकर के बौद्ध धर्म के प्रति झुकाव के प्रमाण उनके द्वारा धर्मांतरण (14 अक्टूबर, 1956) करने से चालीस वर्ष पूर्व से ही मिलने लगते हैं–जैसे 16 वर्ष की आयु में केलुशकर ने बुद्ध की जीवनीं भेंट की। 1945 में बौद्ध सम्मेलन में भाग लिया। 1948 में एल.नरसू की पुस्तक "ऐसेंस आफ बुद्धिज्म" की प्रस्तावना लिखी। 1950 में आधुनिक बौद्धों की प्रथम शोभायात्रा में भाग लिया। कहा जाता है कि वहीं से उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा 1954 में लेने का फैसला किया। डा. आंबेडकर 1950 से ही खुलकर बौद्ध धर्म की ओर झुक गये थे। 24 मई 1950 को उन्होंने बम्बई में बुद्ध जयंती के शुभ अवसर पर यह घोषणा की, कि अक्टूबर के महीने में वे बौद्ध धर्म की दीक्षा लेंगे। 23 सितम्बर 1956 को उन्होंने एक प्रेस नोट जारी किया कि वे नागपुर में दशहरे वाले दिन 14 अक्टूबर 1956 को सवेरे 11 बजे के बीच में बौद्ध धर्म ग्रहण करेंगे। डॉ बी.आर.आंबेडकर अपने पाँच लाख अनुयायियों के साथ समता, स्वतंत्रता बंधुत्व और विज्ञान पर आधारित बौद्ध धर्म में दीक्षा ली। डॉ आंबेडकर बुद्ध, धम्म, संघ को ही सच्चा धर्म मानते थे। वे समझते थे कि धर्म केवल व्यक्ति तक ही सीमित है जबकि धम्म का रिश्ता समाजिक है। उन्होंने धम्म को समस्त मानव जाति का नैतिक पुनरूज्जीवन एवं समाजिक मुक्ति इत्यादि को बौद्ध धार्मिक पद्धति का उद्देश्य माना। बौद्ध धर्म के विषय में डॉ आंबेडकर की तीन दृष्टियाँ थीं। इसमें न आत्मा का अस्तित्व है, न परमात्मा का, और न ही वर्णाश्रम का। उनका कहना था कि बौद्ध धर्म के तीन ऐसे गुण हैं जिनकी समानता नहीं हो सकती, ये हैं प्रज्ञा, करूणा और समता। उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म की तरह सताये गये पददलितों के लिए आशा का एक द्वीप है। बौद्ध धर्म सच्चा धर्म है क्योंकि यह एक ऐसे जीवन पथ की ओर अग्रसर करता है, जिसमें ज्ञान, सन्मार्ग, दया और करूणा है। बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। इस बात का डॉ आंबेडकर ने बखूबी ख्याल रखा कि मेरे धर्म परिवर्तन से इस देश की परम्पराओं, संस्कृति और इतिहास पर आघात न पहुँचे। डॉ आंबेडकर ने अपने इस प्रण को पूरा किया कि मैंने भारत में बौद्ध धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रपात कर दिया। डॉ आंबेडकर ने जो सामूहिक धर्म परिवर्तन किया। सम्पूर्ण भारतीय इतिहास की यह अभूतपूर्व घटना थी। यह मानवता के उत्पीड़न और उसकी दासता के प्रति एक विद्रोह था। यह विद्रोह बौद्ध आन्दोलन ने जगाया। यह एक उदारक शक्ति थी।

उपर्युक्त सभी तथ्यों का सम्यक विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है कि आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान में बाबा साहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर का बहुआयामी, विशिष्ट और महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने श्रीलंका, बर्मा और नेपाल के विश्व बौद्ध भ्रातत्व सम्मेलनों में शामिल होकर, देश, विदेश में इतने व्यापक और विस्तृत तौर पर बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया कि वैसा पूर्व और उसके पश्चात् कभी नहीं हुआ कि एक ही दिन में लाखों लोग[32] बौद्ध धर्म की शरण में आ गये हों। इस प्रकार बाबा साहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर ने आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान हेतु एक मजबूत, स्थाई आधार स्तम्भ स्थापित किया, जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म का निरंतर प्रचार–प्रसार, सम्वृद्धि और विकास हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. धम्मपद की गाथा 58–59वीं (धम्मपदः सं. संघसेन सिंह, दि.वि. वि., 1977, पृ. 20।
2. भारत का इतिहासः कामेश्वर प्रसाद, भारती भवन पब्लिशर्स पटना, 1998, पृ. 220–223।
3. आधुनिक भारत का इतिहासः राजीव गर्ग, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा.लि. , नई दिल्ली 2003, पृ0 592–593।
4. वही पृ. 225।
5. वही, पृ. 227।
6. समतायुग पत्रिकाः आर.पी. राम, बुद्ध पूर्णिमा सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी नई दिल्ली, 2007, पृ. 8।
7. बौद्ध धर्मोपदेष्टाओं का नया संघः प्रो. एच.सी. जोशी, भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली, 1981, पृ. 13।
8. समतायुग पत्रिकाः आर.पी. राम, बुद्ध पूर्णिमा 2007, पृ. 36।
9. भारत का इतिहासः कामेश्वर प्रसाद, भारती भवन पटना, 1997, पृ. 75।
10. आधुनिक भारत का इतिहासः आर.एल. शुक्ल, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 1994, पृ. 260।
11. आधुनिक भारत का इतिहासः राजीव गर्ग, 2003 पृ. 55–56।
12. बुद्ध शासन के रत्नः डॉ. अंगनेलाल, प्रबुद्ध प्रकाशन लखनऊ, 2004, पृ. 120।
13. बौद्ध धर्मोपदेष्टाओं का नया संघः प्रो. एच.सी. जोशी, दिल्ली 1981, पृ. 5।
14. वही, पृ. 5।
15. वही पृ. 5।
16. भगवान बुद्ध और उनका धर्मः डॉ. बी.आर. आंबेडकर, अनु0–भदन्त आनंद कौशल्यायन, सिद्धार्थ प्रकाशन, बम्बई, 2001 पृ. 10।

17. नागपुर का धम्मोपदेशः डॉ. बी.आर. आंबेडकर, भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली, 1997, पृ. 3।
18. धर्मोपदेष्टाओं का नया संघः प्रो. एच.सी. जोशी, दिल्ली, 1981, पृ. 6।
19. वही, पृ. 20–21।
20. नागपुर का धम्मोपदेशः डॉ. बी. आर. अंबेडकर, 1997, पृ. 21–22।
21. वही पृ. 22–23।
22. Ambedkar on Buddhist Conversion and its Impacts-Sanghsen Singh, Eastern Book Linkers, Delhi, 1990, p-207.
23. वही, पृ0 207–208।
24. नागपुर का धम्मोपदेशः डॉ. बी. आर. आंबेडकर, भारतीय बौद्ध महासभा, 1997, पृ. 20–21।
25. वही, पृ. 21।
26. बुद्ध शासन के रत्नः डॉ. अंगने लाल, प्रबुद्ध प्रकाशन, लखनऊ, 2004, पृ. 134।
27. वही, पृ. 134।
28. वही, पृ. 134।
29. आधुनिक भारत के पाँच बौद्ध आचार्यः डॉ. अंगनेलाल, प्रबुद्ध प्रकाशन, लखनऊ, 2004, पृ. 28।
30. वही, पृ. 28।
31. वही, पृ. 28।
32. बुद्ध शासन के रत्नः डॉ. अंगनेलाल, प्रबुद्ध प्रकाशन, लखनऊ, 2004, पृ. 120।